पुस्तकालय कालांश और बच्चे

ज़िया शकूर अंसारी

इस लेख की लेखिका एक लाइब्रेरियन हैं। वे बताती हैं कि उनके स्कूल में सभी बच्चों के लिए पुस्तकालय जाना ज़रूरी है। हर कक्षा के लिए सप्ताह में लगभग 2 घण्टे का समय पुस्तकालय के लिए दिया गया है। बच्चे पुस्तकालय आएँ, उनमें पढ़ने के प्रति दिलचस्पी पैदा हो, यह सुनिश्चित करने के लिए वे कई प्रकार के काम करती हैं। जैसे– बच्चों के लिए किताबें चुनकर उनको पहले से ही मेज़ पर रख देना; कभी-कभार बच्चों के साथ मिलकर पढ़ना और कहानियाँ सुनाना; आदि। वे कहती हैं कि एक बार जब बच्चे पुस्तकालय के प्रति आकर्षित हो जाते हैं, वे उसके लिए अलग से समय निकाल ही लेते हैं। -सं.

पुस्तकालय एक बौद्धिक प्रयोगशाला है। यह कहा जा सकता है कि पुस्तकालय हमारे मस्तिष्क को स्वच्छ एवं पोषक भोजन प्रदान करने वाला व्यवस्थित भोजनालय है। यह हमारी सोचने की क्षमता में वृद्धि करने का केन्द्र है। शैक्षणिक पुस्तकालय में सबसे अधिक महत्त्व स्कूल पुस्तकालय का है। यही पुस्तकालय विद्यार्थी के प्रारम्भिक शैक्षणिक जीवन में अध्ययन के प्रति अभिरुचि जागृत करने में सहायक सिद्ध होता है। स्कूल पुस्तकालय का उद्‌देश्य विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए सामग्री के साथ समय भी उपलब्ध कराना है। वैसे किसी भी शैक्षणिक संस्थान का एक मुख्य उद्‌देश्य यह सुनिश्चित करना भी होता है कि विद्यार्थी पठन-पाठन में दिलचस्पी लें और इसके लिए पुस्तकालय की भूमिका अहम है।



पुस्तकालय कई प्रकार के होते हैं। जैसे– राष्ट्रीय पुस्तकालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, विशिष्ट पुस्तकालय, शैक्षणिक पुस्तकालय, इत्यादि। शैक्षणिक पुस्तकालय के अन्तर्गत विश्वविद्यालय पुस्तकालय, महाविद्यालय एवं स्कूल पुस्तकालय

आते हैं। स्कूल पुस्तकालय स्कूल के शिक्षण और सीखने के माहौल का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। अपने इस लेख में, मैंने शैक्षणिक पुस्तकालय के अन्तर्गत अज़ीम प्रेमजी स्कूल के पुस्तकालय की बात की है। हमारे स्कूल में कक्षा 3 से लेकर कक्षा 10 तक की सभी कक्षाओं के लिए पुस्तकालय में आने का समय निर्धारित किया गया है। प्राथमिक कक्षाओं के लिए 55 एवं माध्यमिक कक्षाओं के लिए 50 मिनट का समय, सप्ताह में दो बार निर्धारित है। प्रत्येक कक्षा में लगभग 30 विद्यार्थी होते हैं। इससे प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी पसन्द की पुस्तक पढ़ने एवं उसे अपने लिए जारी कराने के भरपूर अवसर मिलते हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं, प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों के पढ़ने एवं समझने का स्तर एक दूसरे से अलग होता है। इसलिए प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के साथ पुस्तक को पढ़ने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का सहारा लिया जाता है।

लाइब्रेरियन के पास पुस्तकालय में उपलब्ध सभी पुस्तकों की जानकारी होती है। वह अपनी इस जानकारी के साथ विद्यार्थियों को उनकी सन्दर्भ पुस्तक तक पहुँचने में मदद करता है। विद्यार्थी (पाठक) को सीखने में मार्गदर्शन और समर्थन करने व उन्हें स्वतंत्र पाठक और शिक्षार्थी के रूप में पढ़ने एवं आगे बढ़ने के लिए सदैव तत्पर रहने को हम स्कूल पुस्तकालय प्रभारी के प्रभावी कामकाज के रूप में देख सकते हैं।

उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को उनकी पसन्द एवं स्तर की पुस्तकें उपलब्ध कराने के साथ उनमें पुस्तकों के प्रति लगाव एवं रुचि पैदा करने के लिए कुछ गतिविधियाँ की जाती हैं। नई किताबों से मुलाक़ात कराने के लिए डिस्प्ले वाले स्थान पर किताबें रखने, कुछ किताबों के आवरण को अलमारी या डिस्प्ले बोर्ड पर लगाने से विद्यार्थियों को विषयवार पुस्तकों के बारे में पता चल जाता है।

पुस्तकालय का माहौल स्कूल की दूसरी कक्षाओं से अलग होता है। यहाँ बच्चे अपनी पसन्द की पुस्तक चुन सकते हैं, और स्वतंत्र रूप से पढ़ सकते हैं। पाठक के रूप में पुस्तकालय ही एकमात्र ऐसी जगह है, जहाँ पाठक सभी रूढ़ियों से मुक्त रहकर पढ़ते हैं। पढ़ना व्यक्तिगत पसन्द का मामला है और पुस्तकालय विद्यार्थियों को अपनी व्यक्तिगत पसन्द के अनुसार पुस्तकें चुनने का मौक़ा देता है। जब विद्यार्थियों को पढ़ने का अभ्यास हो जाता है और शुरुआत में ही पढ़ने की आदत पक्की हो जाती है, तब उनमें पढ़ने के प्रति स्थाई रुचि बन जाती है।

लाइब्रेरियन की भूमिका संसाधनों, सूचना, कौशल और ज्ञान के साथ पाठक को सशक्त बनाने की है। मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि पढ़ना व्यक्तिगत चयन का मामला है। इसमें शिक्षण प्रणाली को लचीला बनाए रखना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। शिक्षण स्टाफ़ के रूप में साक्षरता का समर्थन करने और विद्यार्थियों की शिक्षा को सकारात्मक तरीक़े से प्रभावित करने में लाइब्रेरियन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। लाइब्रेरियन के पास पुस्तकालय में उपलब्ध सभी पुस्तकों की जानकारी होती है। वह अपनी इस जानकारी के साथ विद्यार्थियों को उनकी सन्दर्भ पुस्तक तक पहुँचने में मदद करता है। विद्यार्थियों का सीखने में मार्गदर्शन और समर्थन करने व उन्हें स्वतंत्र पाठक और शिक्षार्थी के रूप में पढ़ने एवं आगे बढ़ने के लिए सदैव तत्पर रहने को, स्कूल पुस्तकालय के प्रभारी के प्रभावी काम के रूप में देख सकते हैं।

पुस्तकालय में पढ़ने के लिए बहुत सामग्री होती है। लेकिन ख़ुद के लिए पाठ्य सामग्री का चयन करना कुछ विद्यार्थियों के लिए कठिन कार्य है। उपयुक्त पुस्तक के चयन की प्रक्रिया भी जटिल होती है। विद्यार्थी को ऐसी पुस्तक मिले, जिसे पढ़ने से उसे आनन्द

मिल सके और उचित समय भी मिले ताकि उसकी जिज्ञासा शान्त हो सके, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मैं पुस्तकालय में विद्यार्थियों के आने के पूर्व कुछ तैयारी कर लेती हूँ। मैं विभिन्न विषयों, साहित्य, भाषा, कक्षा एवं स्तर को ध्यान में रखते हुए 30-40 किताबों का चयन करके मेज़ पर रख देती हूँ। इन किताबों में अकसर कहानी, कविता, विज्ञान की रोचक जानकारी, व्यंग्य, डायरी लेखन, आत्मकथा, आदि शामिल होती हैं। जब विद्यार्थी पुस्तकालय के कालांश में आते हैं, वे अपनी पसन्द की किताब को मेज़ से ढूँढ़कर पढ़ने लगते हैं। यदि किसी विद्यार्थी को किसी विषय विशेष की पुस्तक पढ़नी होती है, वह अलग से अपनी पुस्तक की माँग कर सकता है और विद्यार्थी ऐसा करते भी हैं। अकसर वे अलमारी पर जाकर अपनी पुस्तक को ढूँढ़ते हैं। लाइब्रेरियन होने के नाते मैं भी पुस्तक ढूँढ़ने में विद्यार्थियों की मदद करती हूँ। कई बार विद्यार्थी कोई अवधारणा / प्रकरण लेकर आते हैं, जिससे सम्बन्धित लेख या पुस्तक उन्हें पढ़नी होती है। ऐसी परिस्थिति में उनको उचित सामग्री का चयन करने देना महत्त्वपूर्ण कार्य होता है। इस अवधारणा / प्रकरण को लेकर विद्यार्थियों के साथ बातचीत होती है, ताकि उन्हें उनकी माँग के अनुसार सामग्री मिल जाए। जब विद्यार्थियों को अपनी पसन्द की पुस्तक, लेख या जानकारी मिल जाती है, वे उस सामग्री को अपने नाम से जारी कराके पढ़ने के लिए अपने घर भी ले जाते हैं।

इसके साथ ही, लाइब्रेरियन को भी पुस्तकालय के नियमों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को उचित सामग्री सही समय पर मिल सके। विद्यार्थियों को उचित सामग्री प्रदान करने के लिए उनके साथ संवाद करना भी आवश्यक है, ताकि उनकी जिज्ञासा शान्त की जा सके।

हम यह मानते हैं कि विषयों का अध्ययन सीमाओं तक निर्धारित नहीं होना चाहिए। पुस्तकालय इन विषयों की सीमाओं को व्यापक करने का माध्यम होते हैं। मैंने पाया है, बहुत-से विद्यार्थियों की इच्छा ज़्यादा-से-ज़्यादा पुस्तकें पढ़ने की होती है। उनकी जिज्ञासा शान्त करना भी ज़रूरी है। पाठ्यक्रम के अलावा विभिन्न प्रकार की पुस्तकों के बारे में जानने से विद्यार्थी को अपनी रुचियों का पता लगाने में मदद मिलेगी।

पढ़ने की व्यस्तता / पढ़ने के लिए माहौल

प्राथमिक कक्षाओं में सबसे पहले विद्यार्थियों की पुस्तकों से मुलाक़ात कराना आवश्यक है। मैं सबसे पहले पढ़ने के लिए माहौल बनाने का कार्य करती हूँ। इस क्रम में किताबों को मेज़ या दरी पर फैला देते हैं, ताकि बच्चों को किताबों के आवरण दिख सकें। इसके साथ ही, नई किताबों के डिब्बे को सामने रख देते हैं, जिससे बच्चे अपनी पसन्द की किताबें ढूँढ़ लें। एक बार जब पाठ्यक्रम से अलग पुस्तकें पढ़ने का चस्का लग जाता है, ये नन्हे विद्यार्थी भी पुस्तकालय में आने के बहाने ढूँढ़ने लगते



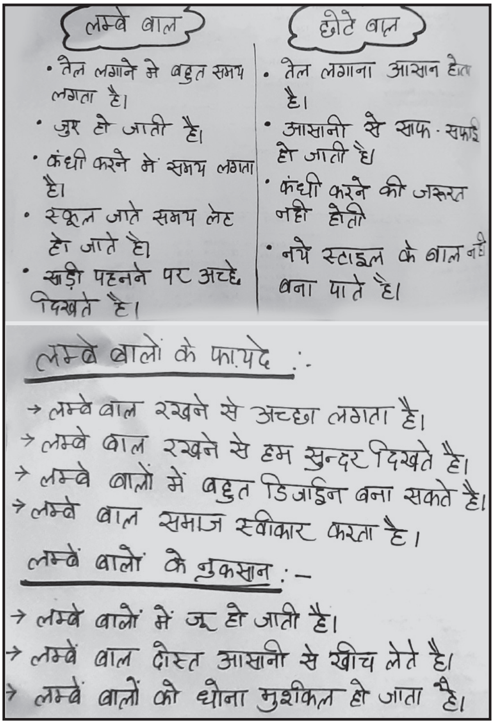


हैं। मैं भी विद्यार्थियों के साथ किताबें पढ़ने, उनपर बातचीत करने, एवं उनको सुनने के लिए तैयार रहती हूँ। मैंने देखा है, विद्यार्थियों की कल्पनाओं की सीमा का कोई मानक तय करना काफ़ी कठिन कार्य है। विद्यार्थियों के साथ काम करते समय मुझे कई मुद्दों पर नए सिरे से सोचने का मौक़ा मिला। इन मुद्दों में एक अहम बात यह थी कि बच्चे कहानियों को अपने जीवन एवं नए दौर के साथ जोड़ने का प्रयास करते हैं, और कुछ बेहतरीन पंक्तियों को (जो उन्हें अच्छी लगती हैं) हूबहू अपनी भाषा में जोड़ लेते हैं।

मैंने देखा है कि जब विद्यार्थी पढ़ने के आनन्द के महत्त्व को समझ जाते हैं, वे किसी भी समय पुस्तकालय में आने को बेताब रहते हैं। कुछ विद्यार्थी मध्याह्न भोजन के समय भी पुस्तकें पढ़ने एवं उनपर अपने विचार बताने के लिए बेताब रहते हैं। वे भोजन करके पुस्तकालय में पढ़ने के लिए आ जाते हैं, और पढ़ने के साथ-साथ अपनी पढ़ी गई सामग्री को मेरे साथ साझा करते हैं और उसपर मेरी राय भी जानने का प्रयास करते हैं। उसमें सवालों के साथ तीखे विचार भी आ जाते हैं। चर्चा में जुड़ने से पढ़ने वाली सामग्री उनके सोचने-समझने के विविध आयाम खोलती है।

पढ़ने की गतिविधियाँ

प्राथमिक और कुछ माध्यमिक कक्षाओं के उन विद्यार्थियों, जो पढ़ नहीं पाते या जिनकी पढ़ने में कम दिलचस्पी है, के लिए ख़ासतौर पर कुछ गतिविधियाँ पुस्तकालय में की जाती हैं। इन गतिविधियों में, विद्यार्थियों के साथ कहानी को पढ़कर सुनाना (रीड अलाउड); उन्हें स्वतंत्र रूप से किताबों को उलटने-पलटने के अवसर देना; जो कुछ (कहानी, कविता, लेख) उन्होंने पढ़ा या समझा है, उसको अन्य साथियों के साथ साझा करने के अवसर देना; आदि शामिल है। यह सुनिश्चित किया जाता है कि प्रत्येक विद्यार्थी को मौक़ा मिले। ऐसी कुछ गतिविधियाँ करने का अवसर भी मुझे प्राप्त हुआ। धीरे-धीरे बच्चे बेहतर ढंग से अपनी पुस्तक को पढ़ने के साथ-साथ अपनी कहानी का भी आनन्द लेने लगे थे। कभी-कभी जब विद्यार्थियों को किसी कहानी में कोई अपरिचित शब्द मिलता है जिसे पढ़ने में उन्हें कठिनाई होती है, तब उनको शब्द में आने वाले वर्णों को देखने के बाद मिलाकर पढ़ने का प्रयास करने के लिए कहा जाता है। विद्यार्थियों को इस प्रकार का प्रोत्साहन मिलने से वे पढ़ने की कोशिश में लगे रहते हैं। यदि कोई विद्यार्थी कुछ पढ़ते समय बार-बार अटकते हैं, मैं उनके नाम नोट कर लेती हूँ ताकि बाद



लम्बे बाल	छोटे बाल
• तेल लगाने मे बहुत समय लगता है।	• तेल लगाना आसान होता है।
• जुए हो जाती है।	• आसानी से साफ-सफाई हो जाती है।
• कंघी करने मे समय लगता है।	• कंघी करने की जरूरत नही होती
• स्कूल जाते समय लेट हो जाते है।	• नये स्टाइल के बाल नहीं बना पाते है।
• साड़ी पहनने पर अच्छे दिखते है।	

लम्बे बालों के फायदे :-

→ लम्बे बाल रखने से अच्छा लगता है।
→ लम्बे बाल रखने से हम सुन्दर दिखते है।
→ लम्बे बालों में बहुत डिजाइन बना सकते है।
→ लम्बे बाल समाज स्वीकार करता है।

लम्बे बालों के नुकसान :-

→ लम्बे बालों में जू हो जाती है।
→ लम्बे बाल दोस्त आसानी से खीच लेते है।
→ लम्बे बालों को धोना मुश्किल हो जाता है।

में उनकी स्पष्ट पढ़ने में मदद कर सकूँ। साथ ही, मैं विद्यार्थियों के पढ़ने को देखते हुए उनके लिए ख़ासतौर पर कुछ किताबें चुन लेती हूँ। जब विद्यार्थी अगली बार पुस्तकालय आते हैं, मैं उनसे कहती हूँ कि वे इन चुनी हुई किताबों को भी पढ़कर देख सकते हैं। विद्यार्थियों के पढ़ने के दौरान, मैं कभी-कभी उनके साथ बैठकर किताब के कुछ हिस्सों को पढ़ने में उनकी मदद भी कर देती हूँ, ताकि उनके पढ़ने की दिक़्क़त कम हो सके। ऐसा करने से उनकी पढ़ने की क्षमताओं में सुधार होने की गुंजाइश सबसे ज़्यादा होती है।

जो विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से पढ़ने का कार्य करते हैं, उनके लिए भी हम कुछ गतिविधियाँ करते हैं। जैसे– कभी-कभार कहानी पढ़ने के बाद उसपर आधारित कुछ लिखित काम करने को कहना। इस काम में, कहानी में उल्लेख किए गए चित्रों के सभी रंगों को नोट करना; मुख्य घटनाओं को याद रखना; संवाद तैयार करना या कहानी का अन्त बदलकर उसे फिर से लिखना; चित्र या वस्तुएँ देकर किसी दूसरे नज़रिए से कहानी को दोबारा पढ़ना; विद्यार्थियों के साथ मिलकर कहानी का विश्लेषण; कल्पना या घटनाओं की बात करते हुए कहानी को मिलकर पढ़ना; आदि शामिल होता है। मैंने पाया कि पहली बार कहानी को मेरे साथ मिलकर पढ़ने के बाद उसे दोबारा पढ़ने में विद्यार्थियों को आसानी हो जाती है। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है, और बच्चे ख़ुद-से भी पढ़ने लगते हैं। इस सबका नतीजा यह होता है कि विद्यार्थी अगली किताब को ख़ुद पढ़ने का प्रयास करते है। वे स्वयं की कहानियाँ तैयार भी करते हैं, और स्कूल असेम्बली में इन्हें उत्साह के साथ सुनाते भी हैं। कुछ विद्यार्थियों की कहानियों को हम स्कूल के डिस्प्ले बोर्ड पर भी प्रदर्शित करते हैं। ऐसे में, जब पढ़ने-लिखने का चस्का लग जाता है, विद्यार्थी पढ़ने के लिए नए साहित्य की तरफ़ बढ़ जाते हैं। पुस्तकालय उनको विभिन्न साहित्य से रूबरू कराता है, और विद्यार्थी यहाँ आने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।



किताब : *चुटकिया की चुटिया*, लेखन: शीतल पॉल और सोनिया मंडल, चित्रांकन : तापोशी घोषाल, प्रकाशक : एकलव्य, पाठक आयु–वर्ग : 8+ वर्ष

चुटकिया की चुटिया **किताब गुणिया की कहानी है। उसके पापा को उसकी लम्बी–काली चोटी बहुत पसन्द थी। इसीलिए वे उसे राजकुमारी कहते थे। लेकिन इस चोटी ने गुणिया के लिए आफ़त कर रखी थी। सुबह जल्दी उठो, बाल धो, तेल लगवाओ, और चोटी बनवाओ। उसे लगता था, ऐसी भी क्या राजकुमारी जो नींद भी पूरी न ले सके। एक दिन तो कौवों ने भी उसके सिर पर हमला कर दिया। ख़ैर! आख़िर उसे चुटकिया कहकर चिढ़ाने वाले पड़ोसी बोका ने तरक़ीब लगाई और कैंची से उसकी दोनों चोटी काट दीं। जब मम्मी आईं, तब क्या हुआ? इस शानदार कहानी को तापोशी घोषाल ने सुन्दर चित्रों से सजाया है।**



पुस्तकालय में की गई गतिविधि की झलक

जब मैंने *चुटकिया की चुटिया* कहानी की किताब पढ़ी, मुझे यह समाज एवं घर–परिवार से जुड़ती लगी। इस कहानी को सभी विद्यार्थियों के साथ मिलकर पढ़ने एवं चर्चा करने का विचार मन में बिजली की तेज़ी से कौंधा। मैंने कक्षा 6 के 30 बच्चों के साथ मिलकर इसे पढ़ा। मैंने इस कहानी को पढ़ने से पहले सिर्फ़ इसके चित्रों की फ़ोटोकॉपी करा ली थी। चित्र देखकर सभी विद्यार्थियों ने अनुमान के साथ कहानी का नाम बनाने का प्रयास किया। चित्रों को देखकर विद्यार्थियों के मन में जो ललक और आतुरता दिखी, उसे मैं बयाँ नहीं कर सकती। मैंने कहानी पढ़ना प्रारम्भ किया। पढ़ते समय विद्यार्थियों को चर्चा का खुला अवसर दिया गया था। इसमें बालों के प्रति विद्यार्थियों के मन की भावना एक अलग ही रूप लेने लगी। विद्यार्थियों ने लम्बे बालों वाली लड़की की तस्वीर देखकर बहुत–सी बातों का अनुमान लगाया। उन्होंने कई बातें बताईं। जैसे– लड़की के बाल ‘उलझे’ जैसे दिख रहे थे; उसे बिजली का झटका लगा था; वह किसी से लड़ाई करके आई थी; आदि। इसके बाद विद्यार्थियों को कहानी की ही कुछ दूसरी तस्वीरें दिखाई गईं। जैसे– लड़की अपने पिता के साथ स्कूटर पर आ रही है और उसके बाल उड़ रहे हैं; फिर कौवे ने उसके बालों पर हमला किया; आख़िरी फ़ोटो में दिखाया जा रहा है कि उसके बालों में से एक ‘चोटी’ सामने फ़र्श पर है और एक पंखे के सामने।

विद्यार्थियों का अनुमान था कि वह अपने बालों को खो देने से दुखी थी, क्योंकि पंखे के अन्दर उसकी चोटी चली गई और उसके बाल कट गए। कहानी के समाप्त होने के बाद विद्यार्थियों से कहानी के बारे में प्रतिक्रिया ली गई। यह प्रतिक्रिया इस प्रकार थी :

- अन्त में चुटकिया का सपना सच होता है, और उसको अपने लम्बे बालों से छुटकारा मिल जाता है।
- लम्बे बालों के कारण कई लड़कियाँ असहज और कम आत्मविश्वास महसूस करती हैं।

- इन दिनों लड़के भी लम्बे बाल रखते हैं। वे लड़कियों से जलन इसलिए महसूस करते हैं, क्योंकि लम्बे बाल सुन्दर लगते हैं।
- आजकल के लड़के लम्बे बाल रखते हैं, क्योंकि उनको अच्छा लगता है।
- बालों को लम्बा रखना किसी एक विशेष वर्ग को दर्शाता है।
- लम्बे बाल रखना किसी विशेष समूह को नहीं दर्शाता है।
- यह हमारा व्यक्तिगत चुनाव होना चाहिए। किसी के ज़ोर या दबाव पर आधारित नहीं होना चाहिए।
- यह आजकल का चलन है। व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व से पहचानना चाहिए न कि उसके लिबास से।
- लड़कों द्वारा कान में रिंग पहनना उनका मौलिक अधिकार है।

इस तरह चर्चा जेंडर पर पहुँच गई।

एक लाइब्रेरियन के रूप में, मैंने पाया कि यह सत्र विद्यार्थियों के लिए कल्पना कौशल विकसित करने में मददगार होगा। शुरुआत में विद्यार्थियों को चित्र देखकर कहानियों के बारे में सोचने के लिए कहा गया। इससे उनमें एक संज्ञानात्मक असंगति पैदा होती है, और वे कक्षा में ध्यान देना शुरू कर देते हैं। इस काम में, विद्यार्थियों की तरफ़ से बहुत सारे चिन्तनशील और सकारात्मक प्रयास शामिल हैं। इसलिए मेरा मानना है कि इस सबसे विद्यार्थियों को ध्यान केन्द्रित करने के साथ-साथ सीखने में भी मदद मिलेगी, और यह भविष्य में उनके सोचने की क्षमता के विकास में मददगार साबित होगा।



स्कूल एक ऐसा संस्थान है, जहाँ से विद्यार्थी पाठक बनने की तरफ़ अपने क़दम बढ़ा सकते हैं। बतौर शिक्षक, हम सभी इस बात को जानते हैं कि बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। यह न केवल उनकी पढ़ाई के लिए आवश्यक है, बल्कि एक ऐसी दक्षता है जो सारी उम्र उनके काम आएगी।

सभी चित्र : ज़िया शकूर अंसारी

ज़िया शकूर अंसारी ने लखनऊ विश्वविद्यालय से मास्टर ऑफ़ लाइब्रेरी साइंस और इनफ़ॉर्मेशन टेक्नोलॉजी में परास्नातक की पढ़ाई की है। 2011 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ी हैं। उनका पढ़ने-लिखने के दौरान चीज़ों को देखने का नज़रिया पुख़्ता हुआ है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड में लाइब्रेरियन के रूप में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : zia.ansari@azimpremjifoundation.org